भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन : आदिवासी जननायकों का योगदान

सुरेंद्र कुमार
शोधार्थी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

परिचय

भारत का आदिवासी जनजाति समाज अपनी अध्यात्मिक परम्पराओं विशिष्ट संस्कृति श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के साथ सदैव से भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। जब-जब देश की सुरक्षा पर संकट आया है जनजाति समाज में अपने शौर्य एवं बलिदान से राष्ट्र की रक्षा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जब अंग्रेजी शासन ने भारत में अपना साम्राज्य विस्तार करना प्रारम्भ किया तो सबसे पहले उन्हें प्रारम्भिक और मजबूत चुनौती बनवासी अंचलों (जंगल) से मिलना प्रारम्भ हुई। जनजाति समाज ने कभी भी अंग्रेजों की दासता स्वीकार नहीं की और समय-समय पर विद्रोह और संघर्ष किया। चाहे तिलक माँझी के नेतृत्व में पहाड़िया आन्दोलन हो कोया जनजाति का विद्रोह हो, कोल जनजाति का संघर्ष आन्दोलन भगवान विरसामुंडा के नेतृत्व का संघर्ष, सिद्धू कान्हा नेतृत्व में संथाल आन्दोलन, भीलों के विभिन्न आन्दोलन मानगढ़ का बलिदान आन्दोलन रानी, गाइदिल्पू के नेतृत्व में नागा आन्दोलन अंग्रेजों के विरुद्ध जनजाति समाज का संघर्ष एवं बलिदान की एक विशाल प्राचीन परम्परा रही है।

संगठित आन्दोलनों एवं विद्रोहों के अलावा जनजाति समाज द्वारा बलिदानों की एक लम्बी श्रृंखला रही है। हजारों नाम ऐसे है जिनका बलिदान इतिहास के पन्नों में दर्ज नहीं हो पाया है। आज की आदिवासी जनजाति समाज में अनेक लोकगीत एवं कथाएं प्रचलित हैं जो अंग्रेजों के साथ हुए आदिवासी जनजाति समाज के संघर्ष, विद्रोह को रेखांकित करते हैं।

"राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण आदिवासी जनजाति समाज द्वारा झेले गए संघर्ष और बलिदान को सत्-सत् नमन।"

अत्यन्त गौरव का विषय है कि हम सब आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं यह एक सुनहरा अवसर है जब हम स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए आदिवासी जनजाति के संघर्षों और बलिदानों को याद करें।

आदिवासी समाज की वीरगाथाओं को पुनः याद करें। आदिवासी जननायकों की वीरगाथाओं को सुने उनके बलिदानों को जाने और स्वयं में अपने समाज के प्रति गौरव का भाव जागृत करें।

साथ ही यह एक अवसर है जब हम अपने आदिवासी जननायकों की परम्परा का निर्वाहन करते हुए राष्ट्र की रक्षा, उन्नति, विकास में स्वयं की भूमिका का संकल्प लें।

जनजातीय आन्दोलन की सबसे प्रमुख विशेषता है कि यह विदेशी शासकों के विरुद्ध अनिवार्य रूप से एक विद्रोह था और इन आन्दोलनों ने एक राष्ट्रीय मंच का रूप ले लिया और महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने इन आन्दोलनों में तेजगति प्राप्त की। जनजातीय क्रान्तिकारियों ने अपनी प्राचीन युद्ध कला कौशल के द्वारा युद्ध किया उन्होंने ब्रिटिश सरकार के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं किया। अपनी पूरी ताकत के साथ अंग्रेजों से संघर्ष

किया। आदिवासी समाज के लोगों ने ब्रिटिश सरकार को जल, जंगल, जमीन बचाने के लिए आन्दोलन किया। आदिवासी जनजाति के अनेक नायक देश की आजादी के लिए फांसी के फंदे पर झूल गये।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में जनजाति समाज के अनेक वीर स्वतन्त्रता सेनानियों वीर भगत, रामजी गौड, जोगिया, परमेश्वर, उतिरत सिंह, फूकन सिंह, संगमा, गुंडाधूर, वीर नारायण सिंह, सुरेन्द्र साय, सिरसा मुडा जैसे अनेक महापुरुषों ने अपने देश की आजादी के लिए बलिदान दिया। झारखण्ड के साहिबगंज जिले के भोगनाडीह गांव से संथाल जनजाती के लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया था। जिसे हूल कहते हैं जिसका अर्थ है क्रान्ति। भारत में अंग्रेजों के आने से पहले जनजातियां जंगलों में निवास करती थी क्योंकि जंगलों में इनका अधिकार था और अपनी सभी आवश्यकताओं (भोजन, पशु-पालन, घरों का निर्माण, जंगलों की लकड़ी से आय, खेती) उनका मुख्य व्यवसाय था।

अंग्रेजों ने नये नियम बनाये और जमीन जंगल के मालिक जमींदार ठेकेदार हो गये। आदिवासी जनजातियों के अधिकार समाप्त हो गये वे भूमिहीन हो गये और जनजातियों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति खराब हो गयी। जब जनजातियों का शोषण अधिक होने लगा तो इन्होंने अपने सरदारों, मुखिया के नेतृत्व में हथियार उठा लिया और विद्रोह कर दिया। यहीं से जनजातियों के आंदोलनों का प्रारम्भ हुआ।

जनजातीय लोगों ने ब्रिटिश सरकार का पुरजोर विरोध किया अनेक आदिवासी जनजातियों को वनों से अलग थलग कर दिया लेकिन प्रत्येक जनजातीय ने अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, विविधता को कायम रखा। उन्होंने अपने क्षेत्र में अंग्रेजी सरकार के खिलाफ स्वतंत्रता के आन्दोलन चलाये। अपनी भूमि पर अतिक्रमण जमीन की बेदखली, पारंपरिक कानूनी और सामाजिक अधिकार रीतिरिवाजों का उन्मूलन, सामंती मालिकाना हक समाप्त, शोषण के खिलाफ बगावत की। कुल मिलाकर यह आन्दोलन सामाजिक धार्मिक, आर्थिक परिवर्तन थे। जनजातीय प्रतिरोध आन्दोलन भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का एक अभिन्न अंग थे।

ऐतिहासिक परिदृश्य

आदिवासी जनजातियाँ आधुनिक सभ्यता से दूर घने जंगलों मरूस्थलों, दुर्गम पर्वतों में निवास करती है। जनजातियाँ हमारी सभ्यता के वे अंग है जो विकास की प्रक्रिया में पिछड़ गये और अपने विचारों एवं जीवन पद्धति में हमारे विकास की प्रक्रिया छुपाये वे इस तथ्य को इंगित करते हैं कि हम इस सभ्यता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने के बाद यह ध्यान रखे कि हमारे पूर्वज किस स्थिति में है।

आदिवासी जनजाति समाज का अपना विशेष परिदृश्य होता है। आदिवासी जनजाति की जीवनशैली विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था के आधार पर चलती है। सामाजिक ढांचे में जनजाति समाज की आंतरिक व्यवस्था कायम रहती है और महिला पुरूषों को समाज के नियमों का पालन करना होता है। आदिवासी जनजाति की संस्कृति, सभ्यता की अलग पहचान होती है। यह जनजाति अपनी प्राचीन आदिम सभ्यता के लिए जानी जाती है।

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया के अनुसार

"आदिवासी जनजातियाँ समान नाम धारण करने वाले परिवारों का संकलन है जो समान बोली बोलते हैं। एक ही भूखण्ड पर रहने के अधिकार का दवा करते हैं।"

रॉल्फ पिडिगटन "ने आदिवासी जनजातियों को परिभाषित करते हुए लिखा है कि हम एक जनजातियों का समूह के रूप में व्याख्या करते हैं।"

आदिवासी जनजातियाँ भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है। सामाजिक विकास के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि आदिवासी जनजाति का सम्बन्ध प्राचीन समय से है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आदिवासी जनजातियाँ अत्यन्त प्राचीन है। यह भारत की मूल निवासी है तथा भारत देश की आदिम मानव जाति का प्रतिनिधित्व भी करती है।

प्रमुख आदिवासी जनजातियों में भील, सहरिया, संथाल, भूमिल, विरोहर, पारधी मानुर, संथाल, मीणा, गोंड, अगरिया, कोली, बैगा, खोड़ा, कोल, कोरवा, मुंडा, प्रधान, बंजारा, लोहर प्रमुख है।

आदिवासी जनजातियाँ पूरे भारत में अलग-अलग हिस्सों में फैली है। देश में लगभग सभी राज्यों में आदिवासी जनजातियाँ निवास करती है।

आदिवासी जनजातीय आन्दोलन के प्रमुख कारण

1. आदिवासियों की खेती की जमीनों पर अंग्रेजी सरकार, व्यापारी, वर्ग का अधिकार हो गया था और आदिवासी जनजाति का शोषण किया जाने लगा था। जिससे उनका आर्थिक और सामाजिक ढांचा समाप्त होने लगा था।

2. ब्रिटिश सरकार के दौरान ईसाई, मिशनरीज आ गये थे और ये जनजातियों के बीच अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे। इससे आदिवासियों की धार्मिक स्वतंत्रता, एकता नष्ट होने लगी और उन पर ईसाई धर्म अपनाने का दबाव डाला जाने लगा।

3. अंग्रेजी सरकार ने नये कानून लागू करके प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इससे आदिवासी लोगों की जीविका समाप्त हो गयी और उन्होंने विद्रोह कर दिया।

4. जमींदारी प्रथा, ठेकेदारी प्रथा, बन्धुआ मजदूरी के द्वारा आदिवासी लोगों की जमीन हड़प ली और प्राकृतिक संसाधनों पर कर लगाया गया। विद्रोह का प्रमुख कारण आर्थिक था जो अंग्रेजी सरकार, ठेकेदार, जमींदार, के खिलाफ किया गया था।

5. आदिवासियों का विद्रोह आर्थिक सामाजिक, शारीरिक शोषण, कानून में परिवर्तन, सूदखोरी, बेगारी की समस्या के विरुद्ध था।

6. जनजातीय आन्दोलन का कारण सांस्कृतिक सभ्यता का समाप्त होना, समायोजन की समस्या, भाषा की समस्या, जनजातीय वर्ग के प्रति उदासीनता, ऊँचनीच की भावना, महिलाओं का शोषण, लोककलाओं का पतन आदि के विरुद्ध था।

7. अंग्रेजी सरकार द्वारा भूमि राजस्व व्यवस्था को कठोर बना दिया गया। आदिवासियों के संसाधन क्षेत्र, वन, समाप्त कर दिये गये। और सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र पर अधिकार कर लिया गया। लकड़ी के इस्तेमाल पर कर लगा दिया गया। पूरा जनजातीय समाज समाप्त होने की कगार पर पहुंच गया। अपनी ही जमीनों से लोगों को बाहर कर दिया गया। इस कारण आदिवासी जनसमुदाय शोषण और जुल्म सहन न कर सके और उन्होंने विद्रोह कर दिया।

आदिवासी जनजातीय आन्दोलन के विभिन्न चरण

1. तमार विद्रोह (1789-1832) भोलेनाथ सहाय के नेतृत्त्व में तमार जनजातीय समुदायों ने ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों के खिलाफ 1789 में जो ब्रिदोह किया वह 1832 तक चला। इस आन्दोलन में मिदनापुर, कोयलपुर, घाघा, चटशिला, जालदा तथा सिल्ली के अन्य जनजातीय समुदाय शामिल हो गये। यह आन्दोलन अंग्रेजों के भूमि सुधार अभियान के कारण हुआ। इसमें आदिवासी लोगों को जमीनों से बेदखल कर दिया गया। तमार जनजातीय यह अन्याय सहन नहीं कर सकी और विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। आदिवासी नेताओं ने अंग्रेजों के थाने को जला दिया और आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। लेकिन अंग्रेजी सरकार की शक्ति और संगठन के कारण विद्रोह समाप्त कर दिया गया।

2. रम्पा विद्रोह (1822-24) रम्पा विद्रोह का क्षेत्र आंध्र प्रदेश जिला था जिसमें राजू बंगाली ने विद्रोह का नेतृत्त्व किया और लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट किया। इन लोगों ने कई पुलिस थानों को घेर लिया और हथियार और गोला बारूद लूट लिया। इस आन्दोलन को स्थानीय जनसमर्थन प्राप्त हो रहा था। लेकिन एकता के आभाव में विद्रोह असफल हो गया और आदिवासी नेताओं

को पकड़कर फांसी दे दी गयी। वर्मा युद्ध समाप्त होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने पहाड़ी इलाकों पर कब्जा कर लिया और विद्रोह समाप्त कर दिया।

3. कोल विद्रोह (1831-32) कोल विद्रोह के नेता बुद्धो भगत थे। इस विद्रोह का स्वरुप आर्थिक एवं राजनैतिक था। विद्रोह का कारण उस इलाके में जमींदारी, ठेकेदारी द्वारा भूमि पर कर अधिक बढ़ा दिया था साथ ही अंग्रेजों द्वारा भू-राजस्व व्यवस्था और स्थानीय लोगों को खेती की भूमि न देकर बाहरी लोगों को जमीन दे दी गयी इस कारण सरदार और अन्य लोग अपनी भूमि से वंचित हो गये और इस कारण उन्होंने विद्रोह का मार्ग अपनाया। 1831 में बुद्धो भगत शहीद हो गये और गंगा नारायण ने 1832 में आन्दोलन का नेतृत्व किया और युद्ध में शहीद हो गये। अंग्रेजों ने यह आन्दोलन समाप्त कर दिया।

4. खरदार आन्दोलन (1833) सन्थाल जाति के लोगों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, क्योंकि अंग्रेजों ने नये कानून बनाकर प्राकृतिक साधन, जमीनों पर कब्जा कर लिया था। सभी आदिवासी बाबा भागीरथ, मांझी के साथ मिलकर खडे हो गये और आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।

5. खोड़ विद्रोह (1835-1855) खोड़ जनजाति के लोग उड़ीसा से लेकर बंगाल और मध्य भारत तक फैले थे। इन्होंने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह किया। विद्रोह का कारण अंग्रेजों द्वारा नये कर लगाना उनके क्षेत्रों में जमींदारी प्रथा प्रारम्भ करना, खोड़ जनजाति में प्रचलित नरबलि पर प्रतिबन्ध लगाना। खोड़ विद्रोह का नेतृत्व चकविसोई ने किया था।

6. रमोसी विद्रोह (1839-1841) अंग्रेजों के साम्राज्य वादी, आर्थिक शोषण (अकाल सूखा, भूमि) की समस्या से परेशान होकर पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र) में रहनी वाली आदिम जनजाति रमोसी ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इसका नेतृत्व चित्तर सिंह एवं नरसिंह पेतकर ने किया था। इन्होंने अंग्रेजी सरकार की नीतियों का विरोध किया और लोगों को जागरूक किया एवं एक जुट होकर आंदोलन प्रारम्भ कर दिया।

7. हुल विद्रोह (1855-1856) इस विद्रोह का कारण अंग्रेजों द्वारा उपनिवेश वाद ब्याज बसूली, जमींदारी प्रथा, महाजनी प्रथा, पुलिस भ्रष्टाचार, संथालों की गरीबी, अंग्रेजी अदालतों से न्याय न मिलना, हूल लोगों को उनकी जमींनों से बेदखल करना प्रमुख कारण था। इस विद्रोह का प्रसार इतनी तेजी से हुआ कि भागलपुर, राजमहल क्षेत्र में अंग्रेजों का शासन समाप्त हो गया। इस विद्रोह में स्थानीय किसान समर्थन कर रहे थे। अंग्रेजों के आने से पहले आदिवासी आबादी जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों के साथ शांतिपूर्ण तरीके से रहती थी। अंग्रेजों ने औद्योगिक क्रांति के लिए जंगजों को काटा और कच्चा माल प्राप्त किया। आदिवासी लोगों का शोषण किया जाने लगा जिससे आदिवासी समूह में आक्रोश फैल गया। आदिवासी वर्ग की जमीन जब्त कर ली गयी। संकट के समय अधिक ब्याज दर पर कर्ज दिया गया इससे आदिवासी गरीब और भूमिहीन हो गये। इसके परिणामस्वरुप आदिवासी वर्ग में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ गया और यही विद्रोह का कारण बना।

8. संथाल विद्रोह (1855-1888) झारखण्ड के आदिवासी वीर योद्धा सिद्धू और कान्हू ने विद्रोह किया इसमें 30 से 35 हजार आदिवासियों ने भाग लिया। स्वतंत्रता आन्दोलन में हजारों सैनिक मारे गये। यह आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों का बडे स्तर पर आन्दोलन था। भारत में सबसे पहले स्वतंत्रता आन्दोलन 1780 में संथाल परगना में प्रारम्भ हुआ। दो आदिवासी वीर तिलका एवं मांझी ने आन्दोलन का नेतृत्व किया इसे दामिन विद्रोह कहा गया। दोनों समूहों में घमाशान युद्ध हुआ। अन्त में अंग्रेजी सेना ने तिलका को गिरफ्तार कर लिया और उसे फांसी दे दी गयी। देश के आन्दोलन में शहीद होने वाला तिलका पहला आदिवासी सेनानी था। इसी तरह अनेक आदिवासी क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों से लड़ते हुये शहीद हो गये। छत्तीसगढ़ का प्रथम शहीद वीर नारायण सिंह 1857 में अंग्रेजों से युद्ध करते हुए शहीद हो गया। मध्य प्रदेश का पहला विद्रोही भील तांतिया मामा 1888 में देश की आजादी के आन्दोलन में शहीद हो गया। इसी प्रकार आदि पुरुष विरसामुण्डा अंग्रेजों से युद्ध करते हुये शहीद हो गये।

9. बिरसा विद्रोह (1895-1901) बिरसा विद्रोह का नेतृत्व प्रखर आदिवासी लड़ाकू बिरसा मुण्डा ने किया। भारत के इतिहास में उसे महान स्वत्रंतता सेनानी और मुण्डा जाति का संरक्षक माना जाता है। बिरसा मुण्डा ने छोटा नागपुर में मुण्डा जाति के किसानों पर सामांती के खिलाफ किया था। यह विद्रोह आदिवासी किसानों, मजदूरों, के लिए था। जमींदारों, ठेकेदारों ने सरकारी अफसरों के साथ मिलकर इनकी जमीन हड़प ली। इसके अलावा अन्य तरीकों से किसानों, मजदूरों, गरीब लोगों का शोषण किया जाने लगा। जमींदार अधिक करों की बसूली करने लगे। इसके परिणामस्वरूप आदिवासियों ने जमींदारी, अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया। आदिवासियों के सभी आन्दोलन शोषण, दमन, प्राकृतिक संसाधन, भूमि के लिए थे एवं ब्रिटिश सरकार की गलत नीतियों के विरुद्ध थे। आदिवासी लोग आजादी की आवाज उठाते और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे थे। इन आन्दोलनों का नेतृत्व जनजातीय नायकों ने किया।

10. ताना भगत आन्दोलन (1914-1919) जात्रा उराव के नेतृत्व में ताना भगत ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। प्रारम्भ में यह एक धार्मिक आन्दोलन था इसे कुरूख धर्म कहा गया। ब्रिटिश सरकार के करों के विरोध में आदिवासी वर्ग ने यह व्रिदोह कर दिया। यह आंदोलन जमींदारों, साहूकारों, ब्रिटिश सरकार के विरोध में था। यह एक तरह का संस्कृतिकरण आंदोलन था। इस विद्रोह को अन्ततः ब्रिटिश सरकार ने पूरी तरह से दबा दिया। एकता के अभाव में यह विद्रोह असफल हो गया और आदिवासी जननायकों को पकड़कर फांसी दे दी गयी।

11. मिदनापुर आन्दोलन (1918-1924) यह आन्दोलन महात्मा गांधी के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के समर्थन में किया गया था और अनेक जनजाति के लोग इस आन्दोलन में शामिल हो गये थे। यह आदिवासी लोगों को कम मजदूरी दिया जाना शोषण करने कार्य के घण्टे बढ़ाने के विरुद्ध था। इन मांगों से आन्दोलन अधिक सक्रिय हो गया था और आदिवासियों ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

12. मणिपुर नागा विद्रोह (1930-31) इस आन्दोलन का प्रारम्भ रोगमई जदोनांग ने किया था। इस आन्दोलन का उद्देश्य एकता लाना, रीति-रिवाज खत्म करके लोगों को जागरूक करना और अपनी प्राचीन संस्कृति को बचाना था। 1931 में ब्रिटिश सरकार ने इस आन्दोलन को दबा दिया और जदोनांग को फाँसी दे दी गयी। आदिवासी लोगों ने अपना विद्रोह महात्मा गाँधी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन से जोड दिया और अंग्रेजों की शोषण कर नीति का विरोध किया।

सारांश-

आदिवासी जनजाति के सभी आन्दोलन शोषण एवं दमन के खिलाफ थे। आदिवासियों के सभी संसाधनों पर अंग्रेजी सरकार जमींदार, ठेकेदार, सूदखोर महाजन आदि ने कब्जा कर लिया था। इसी कारण ये आन्दोलन प्रारम्भ हुये। स्थानीय लोगों ने सभी बाहरी तत्वों का विरोध किया। इनमें से अधिकतर आन्दोलन प्रारम्भ से सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्ति के लगते थे। अपने अधिकारों की आवाज उठाते लगभग सभी आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलनों में बदल गये। ब्रिटिश शासनकाल में जमीन सम्बन्धी कानून लागू होने के कारण आदिवासियों की जमीनों पर कब्जा होने उनका हक छीनने कम वेतन पर मजदूरी कराने, अधिक ब्याज बसूलने आदि सामन्ती प्रणाली लादने के कारणों से आदिवासी जनजाति परेशान हो उठे और उनका आक्रोश देश से अंग्रेजी शासन को समाप्त करने के संकल्प के साथ हुआ। लगभग सभी आन्दोलन आदिवासियों के पहले से चले आ रहे संसाधन समाप्त करने के विरुद्ध थे। प्रत्येक आन्दोलन का नेतृत्व जनजातीय समुदायों के प्रमुख नायकों ने किया। लभग सभी आन्दोलन हिंसक हुये जिनका दमन करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने नरसंहार किये। आदिवासी जनजाति के घर जला दिये और सभी आन्दोलनों को कुचल दिया गया। इससे अनेक जनजातियां नष्ट होने की कगार पर पहुँच गयी। ब्रिटिश सरकार ने आदिवासियों के प्राचीन अधिकार समाप्त कर दिये और एक नयी व्यवस्था बनायी। ऐसा करने से आदिवासी देश की मुख्य धारा से कट गये। जनजातीय के लोगों ने जमींदारी प्रथा, से उत्पन्न समस्या का विरोध किया। सरकार जनजातीय समुदाय के संसाधनों की रक्षा नहीं कर पायी थी। इसी कारण जनजातीय समाज आन्दोलन करने के लिए एकजुट हो गया। इस शोध पत्र में भारत ने जनजातीय आन्दोलनों के विभिन्न चरणों का वर्णन किया गया। इन आन्दोलनों

की प्रकृति के बारे में बताया गया और इसके महत्त्व को रेखांकित किया गया। जनजातीय लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास किया गया इससे आन्दोलनों की स्पष्ट तस्वीर खीचें। जनजातीय लोगों ने किन हालात में और कब यह आन्दोलन प्रारम्भ किये। इन आन्दोलनों का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधन सामाजिक, आर्थिक था। इन आन्दोलनों का मुख्य उद्देश्य जनजातीय लोगों की संस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, पहचान का संरक्षण करना था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डायमेन्सन्स ऑफ ट्राइबल मूवमेन्ट्स इन इण्डिया ए स्टडी ऑफ उदयांचल इन असम वैली मित्तल, इंटर इंडिया पब्लिकेशन्स, एम०सी०पॉल (1985).

2. इंडियन ट्राइबल एण्ड इसू ऑफ सोशल इन इनक्लूजन एण्ड एक्सक्लूजन, स्टडीज इन ट्राइबल्स, सी0जे0 सोनोवॉल (2008).

3. एथनीसिटी एण्ड नेशन-बिल्डिंग इन साउथ एशिया, नई दिल्ली, सेज पब्लिकेशन्स, पी० उर्मिला (1989).

4. ट्राइबल इंडिया नई दिल्ली पालका प्रकाशन एन० हुसैन (1991).

5. आदिवासी पॉलिटिक्स इन मिदनापुर, स्टडीज बॉल्यूम, दिल्ली एस०दास गुप्ता (1985).

6. झारखण्ड मूवमेंट एथनीसिटी एण्ड कल्चर ऑफ साइसेंस, शिमला इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, एस० बासु (1994).

7. स्टेट एगेंस्ट डैमोक्रेसी इन सर्च ऑफ ह्यूमन गवर्नेस नई दिल्ली अजन्ता पब्लिकेशन आर० कोठारी (1988).

8. बिरसा मुंडा एण्ड हिज मूवमेंट, ए स्टडी ऑफ मिलेनेरियन मूवमेंट इन छोटा नागपुर, कलकत्ता, के0 सुरेश सिंह (1983).

9. आदिवासियों के बीच दिल्ली किताब घर, जैन श्रीचन्द्र।

10. जनजातीय जीवन संस्कृति कानपुर किताब घर, शर्मा, राजीव लोचन।

11. भारतीय जनजातियों अतीत के झरोखे से नई दिल्ली, वर्मा, रूपचन्द्र।

12. भारत की आदिवासी जनजाति, शिवा पब्लिकेशन्स, उदयपुर, मेहरा प्रकाशन।

13. ट्राइवल्स वूमेन स्टडीज इन इंडिया, पेग्विन बुक, नई दिल्ली (2008).

वेबसाइट्स

1. sodhganga@inflibnet.ac.in

2. www.google.com

3. www.wikipedia.org.in

4. www.upgovt.in

5. www.mpgovt.in

6. www.rajgovt.in

7. www.jhagovt.in

8. www.govtofindia.in

अन्य सामग्री

1. आदिम जाति कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित सामग्री।

2. आदिम जाति विकास अभिकरण, भोपाल द्वारा प्रकाशित सामग्री।

3. आदिम जाति कल्याण विभाग, झारखण्ड द्वारा प्रकाशित सामग्री।

4. सामाजिक परिवर्तन पत्रिका, नई दिल्ली।

5. मध्य प्रदेश सामाजिक विज्ञान, शोध संस्थान, उज्जैन।

6. आदिवासी जनजातीय संग्रहालय भोपाल द्वारा प्रकाशित सामग्री।

Contributor Details:

सुरेंद्र कुमार
शोधार्थी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी